अध्यक्ष डिएटर एफ. उकडोर्फ़ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीए सलाहकार

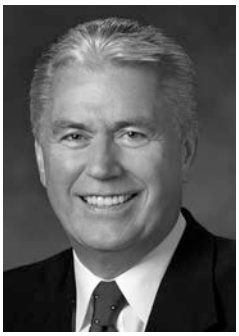

एक शिष्य का जीवन

तीस साल पहले घाना में,एक कॉलेज का युवा छात्रा नामक डो ने अदिंस ने सभाघर के भीतर में पहली बार कदम रखा था । एक मित्र ने डो को उसके साथ आने का निंमत्रण दिया था, और डो गिरजा कैसा दिखता है जानने के लिये बहुत उत्सुक था ।

लोग वहां पर बहुत अच्छे और स्नेही थें कि वह सहायता ही नहीं कर सकती थी बजाए आचंभित होने के, “कि यह किस तरह का गिरजा है ?”

डो बहुत ही प्रभावित हुई थी कि वह गिरजे और उसके लोगों के बारे में और अधिक सीखने का निर्णय लिया, जो अति आनंद से भरा हुआ था । परन्तु जैसे जैसे वह ऐसा करना शुरु करती है, वैसे वैसे परिवार और मित्रों ने हर मोड़ पर विरोध करना शुरु किया । वे गिरजे के बारे में बहुत बुरी बातें बोलते और उसे रोकने के लिये जो कुछ कर सकते थें वह सब करते थें ।

परन्तु डो के पास एक गवाही थी ।

उसके पास विश्वास था, और वह सुसमाचार से प्रेम करती थी, जिससे उसका जीवन खुशी से भर गया था । और तो और, उसने बपतिस्मे के पानी में प्रवेश किया था ।

बाद में, उसने अपने आप को अध्ययन और प्रार्थना में मगन कर लिया । वह उपवास करती और अपने जीवन में पवित्र आत्मा के प्रभाव को तलाशाती थी । परिणाम स्वरुप, डो की गवाही और विश्वास पक्का और गहरा होता गया। आखिरकार उसने प्रभु की पुरे समय का प्रचारक सेवा करने का निर्णाय लिया।

प्रचारक सेवा से वापस आने के बाद,उसने एक वापस आएं प्रचारक के साथ दोस्ती और शादी की जिसने उसे सालों पहले बपतिस्मा दिया था - वे जोहानसबर्ग साऊथ अफ्रीका के मंदिर में बाद में मुहरबंध हुए थें ।

बहुत साल बीत गए हैं तब से जब डो काकु ने यीशु मसीह के सुसमाचार के आनंद को पहली बार अनुभव किया था । उस समय के दौरान, उसके लिए जीवन कभी भी मधुर नहीं रहा था । वह अपने टूटे दिल और निराशा को अन्त बांटती रही,उसमें उसके दो बच्चो का गुजर जाना भी शामिल था।उसके गहरे दुखों का अनुभव आज भी उसके मन में भारी प्रतीत होता है ।

लेकिन वह और उसका पति, एन्थंनी, एक दूसरे के और अपने प्रिय स्वर्गीय पिता के करीब आने का प्रयत्न करते है,जिससे वह अपने पूरे मन से प्रेम करते है ।

आज,उस के पानी का बपतिस्मा लेने के 30 साल बाद,बहन काकु ने हाल ही में एक अन्य मिशन को पूरा किया था --- इस समय अपने पति की तरफ से जो नाईजीरिया में मिशन अध्यक्ष थे ।

वो जो बहन काकु को जानते थे कहते है उनमें कुछ तो विशेष हैं । वह दमकती है । उनके साथ अपने आप में समय व्यतित करना कठिन हो जाता था ।

उनकी गवाही सत्य हूं : “मैं जानती हूं कि उद्धारकर्ता मुझे अपनी एक बेटी और मित्र के रुप में देखता है(देखें मूसायाह 5:7, एथर 3:14),” वह कहती है । “और मैं भी कठिन परिश्रम कर सीखती हूं, उसकी मित्र बने रहने के लिये न सिर्फ मैं जो कहती हूं, परन्तु मैं जो करती हूं के द्वारा भी ।”

हम शिष्य हैं

बहन काकु की कथा बहुत से अन्यों के समान है । उसे सच्चाई को जानने की इच्छा थी, उसने आत्मिक ज्योति को पाने के लिए कीमत चुकाई थी, उसके संगीसाथियों के प्रति अपना प्रेम दर्शाया था, और उसके साथ साथ उसने कठिनाईयों और दुख का अनुभव किया था ।

लेकिन विरोधी को कोई फर्क नहीं पड़ता, ना ही दुख का, वह विश्वास में आगे बड़ती गई । और इतना ही महत्वपुर्ण था, उसे अपना आनंद बनाए रखा था। उसने एक रास्ता ही नहीं पाया जीवन की कठिनाईयों को अन्त तक रहने का परन्तु उसके बवाजूद कामयाब होने का !

उसकी कहानी मेरे और तुम्हारे समान है ।

शायद हमारी यात्रा आसान या बिना परेशानी के हो ।

हम सभी के पास हमारी दिक्कते, हमारी निराशा,हमारे दुख है ।

हम कभी कभी निराशा और कभी उत्साहित महसूस करते है ।

परन्तु वे जो शिष्यता का जीवन जीते हैं,जो लगातार विश्वासी रहते और लगातार विश्वास में बढ़ते जाते है, जो परमेश्वर पर भरोसा रखते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं,[1] जो दिन प्रतिदिन और घण्टे दर घण्टे सुसमाचार को जीते है, और वे जो अपने आसपास मसीह के समान सेवा करते हैं, एक अच्छा काम एक समय पर,जिनके छोटे काम अक्सर बड़े फर्क लाते हैं ।

वे जो थोड़े दयालु है, कुछ और अधिक क्षमा करनेवाले,और एक दया से भरा स्पर्श दया के साथ उनका जो दया को ग्रहण करेंगे । [2] वो जो इस संसार को एक बेहतर स्थान बनाते है, एक ध्यान रखने वाला और एक समय पर प्रिय काम,और वे जो आशीषित जीवन जीने का प्रयत्न करते, और यीशु मसीह के शिष्य का शान्तिमय जीवन जीते हैं, वे आखिकार आनंद को पा लेंगे ।

वे जानेंगे कि "वह परमेश्वर का प्रेम है, जो अपने आप मानव संतान के हृदयों में प्रवेश करता है ... सभी अन्य वस्तुओं से अधिक वांछनीय है ... आत्मा को सबसे अधिक आनंदित करने वाली है ।" [3]

टिपण्णीयां

1. देखें मुसायाह 4:6
2. देखें मत्ती 5:7
3. 1नफी 11:22-23 ।

इस संदेश से शिक्षा देना

अध्यक्ष उकडोर्फ़ ने हमें शिक्षा दी कि शिष्यता का मार्ग कठीन है परन्तु वे जो यीशु मसीह का एक शिष्य होने का " शान्ति " पूर्वक जीवन जीते है वह वो है जिन्होंने आखिरकार आनंद को पा लिया है । जैसे अध्यक्ष उकडोर्फ़ ने डो की कहानी में दिखाया कैसे एक सच्चा मसीह का शिष्य जीवन की परेशानीयो के बावजूद शान्ति और आनंद को पा सकता है, आप शायद अपनी स्वयं की कहानी को बांटने का विचार करें कि आप ने क्यों मसीह का अनुसरण करना चुना और कैसे उसने आप को सार्म्थय दी थी । जब आप को आत्मा के द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता है,अपनी व्यक्तिगत कथाओं को बांटकर आप उनको जिन्हें सिखाते है,बल प्रदान कर सकते हैं ।

युवा

आनंद यीशु मसीह के एक शिष्य का रुप

आपका कभी बुरा दिन गुजरा है? आप ने प्रोत्सहित होने के लिये क्या किया था ? अध्यक्ष उकडोर्फ़ जानते है कि "हम सभी के पास दुखी मन,हमारी निराशा,हमारा दुख है । हम शायद कभी कभी निराश और समय समय पर अति पारजित महसुस करते हैं ।"

उनका नतीजा है जिसे वह "एक शिष्य का जीवन जीओ बुलाते है": "विश्वासी बने रहो और विश्वास में आगे बड़ते रहो ।" जब हम विश्वास मे आगे बढ़ते जाते हैं,हम परमेश्वर में भरोसा करने लगते है,उसकी आज्ञाओं का पालन करते, और दूसरो की सेवा करते है–और इन सब के दौरान इसमें आनंदित होते है ! जैसे अध्यक्ष उकडोर्फ़ कहते है, "वे जो शिष्यता का जीवन जीते है... जिनका छोटा सा कर्म भी बड़ा बदलाव लाता है ।"

विचारे तरीको की सूची बनाएं कि आप शिष्यता का जीवन जी सके । तुरन्त आप सेवा करने के सुझावों को लिख सकते है "अभिभावकों का रात्रिभोज बनाने में मदद करना" या "जैसे एक तरीका आज्ञाओं का पालन करने का सुझाव" "अपने भाई बहन के साथ अधिक धैर्य रखने की प्रार्थना करना ।" अगली बार जब आप और परेशान या पराजित महसूस करें,अपनी सूची निकाले,एक सुझाव ले,और कोशिश करें !

बच्चे

खुशी और बुरा समय

कुछ दिनों के बाद, कुछ कम प्रसन्न के क्षण होते हैं । और यह ठीक भी है । यीशु इससे गुजारने में आप की सहायता करता है ।

एक चेहरा तेवर के साथ बनाएं। कैसे यीशु आपकी सहायता करता है जब आर दुखी होते है ? अब एक मुस्कुराता चेहरा बनाएं । कैसे यीशु प्रसन्न रहने में आपकी मदद करता है ?

© 2017 द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी। अग्रेंजी अनुमतिः6/16 । अनुवाद अनुमतिः6/16 । हिन्दी अनुवाद 97928 294

एक अभिषिक्त जीवन जीना

प्रार्थनापूर्वक इस सामग्री का अध्ययन करें और प्ररेणापूर्वक खोजे की क्या बांटना है । सहायता संस्था के उदेश्य को समझाने के लिये परमेश्वर की बेटियों को अनंत जीवन के लिये कैसे तैयार करेंगी *?*

विश्वास परिवार सहायता

"अभिषिक्त कर नियुक्त करना या कुछ बातों को समर्पित कर जैसे पवित्र करना, पवित्र उदेश्य का समर्पण करना होता है, " एलडर डी.डोड क्रिस्टोफरसन बारह प्रेरितो के परिषद से, ने कहा था : "सच्ची सफलता इस जीवन में अभिषिक्त होने से हमारे जीवन में आती है—वह है:परमेश्वर के उदेश्य के लिये—हमारा समय और चुनाव ।" [1]

एलडर नील ए.मैक्सवेल (1926–2004) बारह प्रेरितों के परिषद से, ने कहा था, "हम सिर्फ अभिषिक्त के बारे में सोचते है जैसे हम मानने लगते है, जब पवित्रता निर्देशन देती है हमारी भौतिक सम्पति के लिये। लेकिन वास्ताव में अभिषिक्त होना परमेश्वर में एक होकर समर्पित होना होता है ।" [2]

जैसे हम परमेश्वर के उदेश्य में अपने आप में अभिषिक्त होते है, हमारा यीशु मसीह में और उसके प्रायश्चित में विश्वास बढ़ने लगेगा । जैसे हम अभिषिक्त जीवन जीते हैं, हम उन क्रियाओं से पवित्र हो सकते हैं ।

करोल एम. स्टीफनसन, सहायता संस्था अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार, कहती हैः "एलडर राबट डी. हेल्स ने सिखाया था, 'जब हम अनुबंध बनाते और रखते हैं, हम संसार से बाहर आते है और परमेश्वर के राज्य के भीतर होते है ।'

"हम बदल जाते हैं । हम भिन्न दिखते हैं, और हम विभिन्न तरह से काम करते हैं । हम जो कुछ सुनते और पढ़ते और कहते है भिन्न होता है, और जो कुछ हम पहनते है भिन्न होता है क्योंकि हम परमेश्वर की बेटियां उसके अनुबंध से बंधी होती है ।" [3]

अभिषिक्त होना परमेश्वर का अनुबंध बनाना है " मै उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से जो बांधूगा, वह यह हैः मैं अपनी व्यवस्था उनके मन को समझाऊंगा,और उसे उनके हृदय में लिखूंगा,और मैं उनका परमेश्वर ठहरुंगा,और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे" (यिर्मयाह 31:33) । अभिषिक्त जीवन जीना परमेश्वर के अनुरुपता के साथ हमारे लिये योजना है ।

अतिरिक्त शास्त्र

1थिस्सलुनीकियों 1:3 ; सिद्धान्त और अनुबंध 105:5

टिपण्णीयां

1. D. Todd Christofferson, "Reflections on a Consecrated Life," लियाहोना, नव . 2010, 16.
2. Neal A. Maxwell, "Consecrate Thy Performance,"लियाहोना, जूलाई 2002, 39.
3. Carole M. Stephens, "Wide Awake to Our Duties, लियाहोना ,नव 2012, 115–16

इस पर विचारे

कैसे हमारा जीवन प्रभु के लिये अभिषिक्त होने में हमारी सहायता उसकी तरह और अधिक बनने में करता है ?

© 2017 द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी। अग्रेंजी अनुमतिः6/16 । अनुवाद अनुमतिः6/16 । हिन्दी अनुवाद 97928 294